है; **अकृतबुद्धित्वात्**=अशुद्ध बुद्धि के कारण; **न**=नहीं; **सः**=वह; **पश्यति**=देखता है; **दुर्मतिः**=मूर्ख (अज्ञानी)।

अनुवाद

अतएव जो अशुद्ध बुद्धि के कारण केवल इन पाँच हेतुओं के स्थान पर अपने को ही कर्ता समझता है, वह निःसन्देह अज्ञानी है और तत्त्व से नहीं देखता।।१६।।

तात्पर्य

मूर्ख मनुष्य यह नहीं समझ सकता कि परमात्मा हृदय में सखारूप से विराजमान हैं और उसके कर्मों का संचालन कर रहे हैं। अधिष्ठान, कर्ता, चेष्टा और इन्द्रियों रूप प्राकृत उपादान कारणों के ऊपर एक परम कारण भी है—श्रीभगवान्। अतः चार उपादान कारणों के साथ परम निमित्त कारण को भी देखना चाहिए। जो कर्म में परमात्मा का हाथ नहीं देखता, वह अपने को ही कर्ता मान बैठता है।

यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते।
हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते।।१७।।

यस्य=जिसके; **न**=नहीं है; **अहंकृतः**=मिथ्या अहंकार का; **भावः**=स्वभाव; **बुद्धिः**=बुद्धि; **यस्य**=जिसकी; **न**=नहीं; **लिप्यते**=लिप्त होती; **हत्वा अपि**=मार कर भी; **सः**=वह; **इमान्**=इस; **लोकान्**=संसार को; **न**=न (तो); **हन्ति**=मारता है; **न**=न हीं; **निबध्यते**=बँधता है।

अनुवाद

जो मिथ्या अहंकार से प्रेरित नहीं है और जिसकी बुद्धि लिप्त नहीं होती, वह इस सम्पूर्ण संसार को मारने पर भी वास्तव में न तो किसी को मारता है और न अपने कर्म से बँधता ही है।।१७।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् अर्जुन को सूचित करते हैं कि उसकी न लड़ने की इच्छा मिथ्या अहंकार से ही उठी है। अर्जुन अपने को कर्ता मान बैठा; अन्तर्यामी परमात्मा तथा सामने साक्षात् रूप में उपस्थित भगवान् श्रीकृष्ण की आज्ञा पर उसने विचार नहीं किया। जो यह नहीं जानता कि कोई परम निर्देश भी है, वह कर्म में प्रवृत्त ही क्यों हो? दूसरी ओर, जो कर्म के करण को, कर्ता रूप में अपने को और परम निदेशक के रूप में परमेश्वर को जानता है, उसके सम्पूर्ण कर्म पूर्ण सिद्ध होते हैं। वह पुरुष कभी माया-भ्रम में नहीं पड़ता। जीव पर निजी क्रिया और दायित्व का भार मिथ्या अहंकार और निरीश्वरता, अर्थात् कृष्णभावना के अभाव के कारण ही पड़ता है। कृष्णभावना-भावित पुरुष यदि श्रीभगवान् अथवा परमात्मा के निर्देश के अनुसार मारने में भी प्रवृत्त हो जाय, तब भी वह वास्तव में न तो किसी को मारता है और न ही कभी उसे ऐसे मारने से कोई बन्धन होता है। जो योद्धा नायक के आदेश पालन में किसी को मारता